Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 7 | JULY 2019

डॉ. रामविलास शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
(DR. RAM VILAS SHARMA: PERSONALITY AND CREATION)

DR. SANJEEV KUMAR [1]
[1] ASSISTANT PROF. IN HINDI, SDWG GOVT COLLEGE BEETAN, DISTT UNA (HP)-176601.

ABSTRACT:

डॉ.रामविलास शर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार, विचारक एवं कवि थे। व्यवसाय से अंग्रेजी के प्रोफेसर, दिल से हिन्दी के प्रकांड पंडित और महान विचारक, ऋग्वेद और मार्क्स के अध्येता, कवि, आलोचक, इतिहासवेत्ता, भाषाविद्, राजनीति-विशारद ये सब विशेषण उन पर समान रूप से लागू होते थे।

KEYWORDS:

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. जन्म एवं प्रारम्भिक शिक्षा - डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म 10 अक्तूबर 1912 ई. के दिन उच्चगाँव सानी, जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पैतृक गाँव तथा झांसी में ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए डॉ. शर्मा लखनऊ चले गए जहाँ से उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. तथा पी. एच. डी. की उपाधि सन् 1938 ई. में प्राप्त की। सन् 1938 ई. से ही आप अध्यापन क्षेत्र में आ गए। आपने अपना अध्यापन कार्य लखनऊ विश्वविद्यालय से एक प्रवक्ता के रूप में आरम्भ किया, तत्पश्चात् 1943 से 1974 ई तक आपने बलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा में अंग्रेजी विभाग में कार्य किया और अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। इसके बाद कुछ समय तक कन्हैया लाल माणिक मुंशी हिन्दी विद्यापीठ आगरा में निदेशक के पद पर रहे तथा इसी संस्थान से एक लम्बे समय तक प्रशंसनीय कार्य करने के पश्चात् सेवानिवृत हुए।

2. सामाजिक बुराईयों के कट्टर विरोधी : डॉ.रामविलास शर्मा सामाजिक बुराईयों के कट्टर विरोधी थे। उनका मानना था कि भूखमरी, अशिक्षा, अंधविश्वास और नए-नए रोग फैलाने वाली वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को बदलना अति आवश्यक है। इसके लिए भारत और इसके पड़ोसियों को सम्मिलित रूप से कठोर प्रयास करने होंगे। जब भी यह प्रयास हों, यह अनिवार्य है कि तब पड़ोसियों से हमारे वर्तमान संबंध बदलेंगे और उनके बदलने के साथ वे और हम अपने पुराने संबंधों को नए सिरे से पहचानेंगे।

3. भारतीय संस्कृति पर शोध : भारतीय संस्कृति की पश्चिम एशिया और यूरोप में व्यापकता पर शोधपरक कार्य डॉ. रामविलास शर्मा जी ने किया है, इस कार्य में उन्होंने नृतत्वशास्त्र, इतिहास तथा भाषाशास्त्र का सहारा लिया है। शब्दों की संरचना और उनकी उत्पत्ति का विश्लेषण कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आर्यों की भाषा का गहरा प्रभाव यूरोप और पश्चिम एशिया की भाषाओं पर है। वे लिखते हैं -"सन् 1786 में ग्रीक, लैटिन और संस्कृत के विद्वान विलियम जोंस ने कहा था, 'ग्रीक की अपेक्षा संस्कृत अधिक पूर्ण है। लेटिन की अपेक्षा अधिक समृद्ध है और दोनों में से किसी की भी अपेक्षा अधिक सुचारू रूप से परिष्कृत है।" पर दोनों से क्रियामूलों और व्याकरण रूपों में उसका इतना गहरा सम्बंध है, जितना अकस्मात उत्पन्न नहीं हो सकता। यह सम्बंध सचमुच ही इतना सुस्पष्ट है कि कोई भी भाषाशास्त्री इन तीनों की परीक्षा करने पर यह विश्वास किए बिना नहीं रह सकता कि वे एक ही स्त्रोत से जन्मे हैं। जो स्रोत शायद अब विद्यमान नहीं है।

4. स्वतंत्रता प्राप्ति हेतू जनजागरण : अंग्रेजों के प्रभुत्व से भारतीय जनता की मुक्ति की कामना करते हुए उन्होंने लिखा है -"हम निश्चयपूर्वक, न्यूनाधिक सुदूर अवधि में उस महान और दिलचस्प देश को पुनर्जीवित होते देखने की आशा कर सकते हैं, जहाँ के सज्जन निवासी राजकुमार साल्तिकोव (रूसी लेखक) के शब्दों में इटैलियन लोगों से अधिक चतुर और कुशल हैं, जिनकी अधीनता भी एक शांत गरिमा से संतुलित रहती है, जिन्होंने अपने सहज आलस्य के बावजूद अंग्रेज अफसरों को अपनी वीरता से चकित कर दिया है, जिनका देश हमारी भाषाओं, हमारे धर्मों का उद्गम है, और जहाँ प्राचीन जर्मन स्वरूप जाति में, प्राचीन यूनान का स्वरूप ब्राहयण में प्रतिबिंबित है।"

5. डॉ.रामविलास शर्मा का मार्क्सवादी व पाश्चात्य दृष्टिकोण : डॉ.रामविलास शर्मा मार्क्सवादी दृष्टि से भारतीय संदर्भों का मूल्यांकन करते हैं, लेकिन वे इन मूल्यों पर स्वयं तो गौरव करते ही हैं, साथ ही अपने पाठकों को निरंतर बताते हैं कि भाषा और साहित्य तथा चिंतन की दृष्टि से भारत अत्यंत प्राचीन देश है। वे अंग्रेजों द्वारा लिखवाए गए भारतीय इतिहास को एक षड्यंत्र मानते हैं। उनका कहना है कि यदि भारत के इतिहास का सही-सही मूल्यांकन करना है तो हमें अपने प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करना होगा। उनका कहना है कि अंग्रेजों ने जान-बूझकर भारतीय इतिहास को नष्ट किया है। ऐसा करके ही वे इस महान राष्ट्र पर राज कर सकते थे और उन्होंने वही किया भी है।

6. हिन्दू-मुस्लिम राष्ट्रीय एकता : निराला की साहित्य साधना (भाग-2) में डॉ. रामविलास शर्मा जी लिखते हैं, निराला जी सदैव हिन्दू-मुस्लिम एकता की पैरवी करते रहे। हर राजनीतिज्ञ की तरह निराला भी जानते थे कि 'फूट डालो और राज करो' - यह अंग्रेजों की नीति है। उन्होंने साहस से इस तथ्य का सामना किया और समझा कि हिन्दुओं और मुसलमानों में

परस्पर घृणा का भाव मौजूद है। इस घृणा की जड़ इतिहास में है, अधिकांश हिन्दू समझते हैं कि वे विजित हैं और अधिकांश मुसलमानों में यह भाव है कि वे विजेता रह चुके हैं। परन्तु निराला इस घृणा को क्षणिक मानते हैं। निराला जी हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर आरम्भ से ही गम्भीरता से विचार करते आए थे। उनका मानना था कि राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दू-मुस्लिम एकता ज़रूरी है, इसके लिए परस्पर शत्रुभाव न रखकर दोनों को एक ही राष्ट्र का अभिन्न अंग बनना चाहिए। निराला जी ने इस संदर्भ में 'साहित्य की समतल भूमि' शीर्षक से 1953 ई में 'समन्वय' पत्रिका में लिखा है, "समतल भूमि का अर्थ है, वह विचारभूमि जहाँ बड़े-छोटे का भेद नहीं है, धार्मिक संकीर्णता नहीं है। रीति-रिवाजों में हिन्दुओं से सम्पूर्णतः पृथक मुसलमान जाति भी साहित्य और ज्ञान की भूमि में हिन्दुओं के समान ही है"। मुसलमान और हिन्दू कवियों में विचार साम्य है। हिन्दू और मुसलमान, दोनों जातियाँ ऊंची भूमि पर एक ही बात कहती हैं।

साहित्यिक परिचय : डॉ. रामविलास शर्मा के साहित्यिक जीवन का आरम्भ 1933 ई. से होता है जब वे सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के सम्पर्क में आए। 1934 ई में उन्होंने 'निराला' पर एक आलोचनात्मक आलेख लिखा, जो उनका पहला आलोचनात्मक लेख था । यह आलेख उस समय की चर्चित पत्रिका 'चाँद' में प्रकाशित हुआ। इसके बाद वे निरंतर सृजन की ओर उन्मुख रहे।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद डॉ.रामविलास शर्मा ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं, जो भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं। उनकी आलोचना प्रक्रिया में केवल साहित्य ही नहीं होता, बल्कि वे समाज, अर्थ, राजनीति, इतिहास को एक साथ लेकर साहित्य का मूल्यांकन करते हैं। अन्य आलोचकों की तरह उन्होंने किसी रचनाकार का मूल्यांकन केवल लेखकीय कौशल को जाँचने के लिए नहीं किया है, बल्कि उनके मूल्यांकन की कसौटी यह होती है कि उस रचनाकार ने समय के साथ कितना न्याय किया है। हिन्दी लेखकों में महाकवि 'निराला' के साथ-साथ जिन साहित्यकारों से डॉ. रामविलास शर्मा जी सर्वाधिक प्रभावित हुए उनमें प्रमुख हैं प्रसिद्ध साहित्यकार एवं आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा उपन्यास को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाने वाले तथा हिन्दी उपन्यास को नई दिशा देने वाले उपन्यास स्तम्भ मुंशी प्रेमचन्द जी हैं। शर्मा जी ने इन साहित्यकारों की रचनाओं का गहन अध्ययन कर प्रगतिवादी दृष्टिकोण से, विश्वसनीय साहित्यिक आलोचना प्रस्तुत की। डॉ. शर्मा जी ने साहित्यकारों के व्यक्तित्व का विश्लेषण कर हिन्दी साहित्य में उनके योगदान की प्रशंसा की। उनके अनुसार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा मुंशी प्रेमचन्द जी न सिर्फ सर्वोत्तम साहित्यकार हैं बल्कि उदार एवं महानुभाव व्यक्तित्व के स्वामी भी हैं। 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना' नामक ग्रंथ में शुक्ल जी के संदर्भ में इस सत्य पर बल देते हुए डॉ. शर्मा लिखते हैं - 'इस महान लेखक ने सामंती तथा दरबारी साहित्य का यह कहकर प्रबल विरोध किया कि यह समकालीन भारतीय समाज और साधारण मनुष्य के जीवन का सच्चा चित्र प्रस्तुत नहीं करता'।

डॉ. रामविलास शर्मा एवं उनकी प्रकाशित कृतियाँ : रामविलास शर्मा जी निरंतर सृजन की ओर उन्मुख रहे। अपनी सुदीर्घ लेखन यात्रा में उन्होंने लगभग एक सौ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का सृजन किया, जिनमें 'हिन्दी जाति का साहित्य', 'भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्यायें', 'भारतीय नवजागरण और यूरोप', 'गाँधी, आंबेदकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ', 'भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश', निराला की साहित्य साधना', 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण', 'पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद', 'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद', 'भारतीय साहित्य और हिन्दी जाति के साहित्य की अवधारणा', 'भारतेन्दु युग' तथा 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी' जैसी कालजयी रचनाएँ शामिल हैं।

आलोचना ग्रंथ / निबंध :

- निराला (1946 ई.)
- प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.)
- भाषा, साहित्य और संस्कृति
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- प्रगति और परम्परा (1953)
- भाषा और समाज (1961)
- आस्था और सौन्दर्य (1960-61)
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना (1973)
- निराला की साहित्य साधना (तीन - भाग) (1969-76)
- महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण'
- भारतीय साहित्य की भूमिका (1996)
- इतिहास दर्शन (1997)
- परम्परा का मूल्यांकन
- नयी कविता और अस्तित्तवाद
- प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ
- आलोचना और साहित्य का इतिहास
- रूप तरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि
- स्वाधीनता संग्राम - बदलते परिप्रेक्ष्य में
- अपनी धरती अपने लोग (आत्मकथा)

कविताएँ :

- चाँदनी
- दिवा स्वप्न
- परिणति
- शार्दिया
- सिलाहारा

- रूप तरंग
- सदियों के सोये जाग उठे

'चार दिन' उनके लिखे उपन्यासों, 'अपनी धरती अपने लोग' व 'घर की बात' आत्मकथात्मक रचनाओं तथा 'आस्था और सौंदर्य' व 'विराम चिन्ह' उनके निबंध साहित्य के चुने हुए उदाहरण हैं। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तार सप्तक' (1943 ई) के एक कवि के रूप में आपकी रचनाएँ बहुत चर्चित हुई हैं।

पुरस्कार व सम्मान : निराला की 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज स्मृति', 'तुलसीदास' तथा 'परिमल' पर प्रस्तुत आलोचना प्रमुख हैं। 1970 ई में उनकी 'निराला की साहित्य साधना (तीन खण्ड) रचना को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' के लिए चुना गया । 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी' पर प्रशंसनीय कार्य के लिए 1991 ई में के. के. बिरला फाउंडेशन द्वारा उन्हें पहले 'व्यास सम्मान' पुरस्कार के लिए चुना गया। इनके अतिरिक्त डॉ. रामविलास शर्मा जी को साहित्य के क्षेत्र में बहुमूल्य कृतियों के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'भारत भारती' सम्मान तथा हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा 'शलाका सम्मान' सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया। यहाँ यह कहना भी महत्त्वपूर्ण है कि डॉ.रामविलास शर्मा जी ने बहुत से पुरस्कारों के रूप में दी जाने वाली धन राशि को लेने से विनम्रतपूर्वक यह कह कर मना कर दिया कि इस धन राशि को शिक्षा एवं साहित्य के उत्थान के लिए उपयोग में लाया जाए।

हिन्दी जाति की अवधारणा : हिन्दी जाति की अवधारणा रामविलास शर्मा के जातीय चिंतन का केंद्रीय बिन्दु है। भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन तथा वैश्विक साहित्य से अन्तर्क्रिया के द्वारा रामविलास जी ने साहित्य के जातीय तत्वों की प्रगतिशील भूमिका की पहचान की है।

डॉ. रामविलास शर्मा : शताब्दी वर्ष 2012-13 : 30 मई 2000 को हिन्दी के प्रकांड पंडित, महान विचारक तथा हिन्दी साहित्य की हर विधा पर अपनी लेखनी का जादू दिखाने वाले डॉ. रामविलास शर्मा जी अपनी जीवन-यात्रा पूर्ण कर हमेशा-हमेशा के लिए ज़ुदा हो गए। वर्ष 2012-13 डॉ. रामविलास शर्मा जी का शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया गया। रामविलास शर्मा के ऊपर व्याख्यान देते हुए वीर भारत तलवार जी ने कहा था कि रामविलास शर्मा की मृत्यु ने हिन्दी मीडिया को झकझोर करके रख दिया है। वे कहते हैं-" रामविलास जी की मृत्यु के बाद जो हिन्दी अख़बार प्रकाशित हुए, उन सबों ने मुख्य पृष्ठ पर उनकी मृत्यु के समाचार को प्रमुखता से जगह दी। ... बड़ी-बड़ी सुर्खियाँ लगाई। ऐसा कि 11 सितम्बर को वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर जो हमला हुआ था, उसकी भी सुर्खियाँ ऐसी न थीं। हिन्दी के किसी अन्य साहित्यकार को यह सम्मान प्राप्त नहीं है। मुझे नहीं लगता कि पूरे हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु की मृत्यु के बाद किसी और की मृत्यु के समाचार को इतनी प्रमुखता मिली होगी जितनी रामविलास जी को।"

इससे हम रामविलास शर्मा जी की लोकप्रियता और उनके जाने से हुई क्षति दोनों का अनुमान लगा सकते हैं।

स्पष्ट है कि राम विलास शर्मा जी हिन्दी के उत्कृष्ट साहित्यकार रहे हैं।

REFERENCES

1. पश्चिम एशिया और ऋग्वेद, डॉ. रामविलास शर्मा; पृ.20 ।
2. निराला की साहित्य साधना (खण्ड-2),डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.51 ।
3. निराला की साहित्य साधना (खण्ड -2),डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.59।
4. विकीपीडिया , डॉ. रामविलास शर्मा (इंटरनेट)।

(अन्य संदर्भ ग्रंथ सूची)

1. घर की बात, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन (पहला संस्करण) नई दिल्ली ।
2. निराला, रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा - 3
3. प्रेमचन्द और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

शोधकर्ता :-
डॉ संजीव कुमार, सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय बीटन,
जिला -ऊना (हिमाचल प्रदेश)
दिनांक : 08 जून 2019